प्रातः क्लास 27/11/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओम शान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। यह तो बच्चों ने निश्चय किया है रूहानी बाप हम रूहानी बच्चों को पढ़ाते हैं, जिसके लिए ही गायन है आत्माएँ परमात्मा... अलग रहे बहुकाल.....। मूलवतन में अलग नहीं रहते हैं। वहाँ तो सभी इकट्ठे रहते हैं। अलग कहते हैं, ज़रूर आत्माएँ वहाँ से बिछुड़ती हैं। आकर अपना-2 पार्ट बजाती हैं। सतोप्रधान से उतरते–2 तमोप्रधान बनती हैं। बुलाते भी हैं– हे पतित-पावन! आकर हमको पावन बनाओ। बाप भी कहते हैं हम 5000 वर्ष बाद आते हैं। यह सृष्टि का चक्र ही 5000 वर्ष है। आगे तुम यह नहीं जानते थे। शिवबाबा समझाते हैं तो ज़रूर कोई तन द्वारा समझावेंगे ना। ऊपर से कोई आवाज़ तो नहीं करते हैं। शक्ति वा प्रेरणा आदि की बात नहीं। जैसे तुम आत्माएँ शरीर में आकर वातावरण(अवतरण) करते हो वैसे बाप भी कहते हैं– मैं भी शरीर द्वारा डायरैक्शन देता हूँ। फिर उस .... जो जितना चलते अपना ही कल्याण करते हैं। श्रीमत पर चलें वा न चलें, टीचर का सुनें न सुनें, अपने लिए ही कल्याण व अकल्याण करते हैं। न पढ़ेंगे तो ज़रूर फेल होंगे। यह भी समझाते रहते हैं, शिवबाबा से सीखकर फिर औरों को सिखलाना है। फादर सोज़ सन। जिस्मानी फादर की बात नहीं। यह है रूहानी बाप। यह भी तुम समझते हो जितना हम श्रीमत पर चलेंगे उतना ही वर्सा पावेंगे। पूरा चलने वाले को ऐसा पद मिलेगा। कम चलने वाले .... ऐसा पद मिलेगा। बाप तो कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। रावण राज्य में तुम्हारे ऊपर पाप तो बहुत ही चढ़े हुए हैं। विकार में जाने से ही पापात्मा बनते हैं। पुण्यात्मा और पापात्मा ज़रूर होते हैं। पुण्यात्माओं के आगे पापात्माएँ माथा टेकते हैं। मनुष्यों को यह भी पता नहीं है कि देवताएँ जो पुण्यात्मा हैं फिर वही पुनर्जन्म में आते-2 पाप-आत्मा बनते हैं। वह तो समझते हैं, वह तो सदैव ही पुण्यात्मा हैं। बाप समझाते हैं पुनर्जन्म लेते-2 सतोप्रधान से तमोप्रधान तक आ जाते हैं। जब बिल्कुल पापात्मा बन जाते हैं तो फिर बाप को बुलाते हैं। जब पुण्यात्मा हैं तो याद करने की दरकार नहीं। तो यह तुम बच्चों को समझना है। सर्विस करनी है। बाप तो नहीं जाकर सभी को सुनावेंगे। साधु-संत आदि मिसल यह नहीं है। देखते हैं बच्चे सर्विस करने लायक हैं तो बच्चों को ही जाना चाहिए। मनुष्य तो दिन-प्रतिदिन असुर बनते जाते हैं। पहचान न होने के कारण बकवाद करने भी देरी नहीं करते; क्योंकि वह तो समझते हैं परमात्मा ठिक्कर-भित्तर में है; क्योंकि शास्त्र ही झूठी हो गई है। एक गीता पर ही सारा मदार है। मनुष्य कहते हैं गीता का भगवान कृष्ण है। तुम समझाते हो वह तो देहधारी है। उनको देवता कहा जाता। कृष्ण को कब बाप नहीं कहेंगे। यह तो सभी फादर को याद करते हैं। आत्माओं का फादर तो दूसरा कोई होता ही नहीं। यह प्रजापिता ब्रह्मा भी कहते हैं निराकार फादर को याद करना है। वह कॉरपोरियल फादर को ही(कहा) जाता है। समझाया तो बहुत जाता है। कई पूरा न समझ कर उल्टा रास्ता ले जाकर जंगल में पड़ते हैं। बाबा तो रास्ता बताते हैं स्वर्ग में जाने का। फिर भी जंगल तरफ चले जाते हैं। बाप समझाते हैं तुमको जंगल तरफ ले जाने वाला रावण है। तुम माया से हार खाते हो, रास्ता भूल जाते हो, तो फिर उस जंगल के काँटे बन जाते हो। वह फिर स्वर्ग में भी देरी से आवेंगे। यहाँ तो तुम आये ही हो स्वर्ग में जाने का पुरुषार्थ करने। त्रेता को भी स्वर्ग नहीं कहा जाता। 25% कम हुआ ना। वह फेल गिना जाता। यहाँ तुम आये ही हो पुरानी दुनिया को छोड़ नई दुनिया में ले जाने लिए। बाप कहते हैं पुरानी दुनिया को त्याग अब नई दुनिया को याद करना है। ऐसे थोड़े ही कहते हैं कि त्रेता को याद करो। त्रेता को नई दुनिया नहीं कहेंगे। नापास वहाँ चले जाते हैं; क्योंकि रास्ता ठीक पकड़ते नहीं। नीचे-ऊपर होते रहते हैं। तुम महसूस करते हो, जो याद होनी चाहिए वह नहीं रहती। स्वर्गवासी जो बनते हैं उनको कहेंगे अच्छा पास। त्रेतावासी नापास गिने जाते। तुम नर्कवासी से स्वर्गवासी बनते हो। नहीं तो फिर नापास कहा जाता है। उस पढ़ाई में तो फिर दुबारा पढ़ते हैं। इसमें दूसरा वर्ष पढ़ने की तो बात ही नहीं। जन्म-जन्मांतर, कल्प-कल्पांतर वही इम्तहान पास करते हैं, जो कल्प पहले किया है। इस ड्रामा के राज़ को भी अच्छी रीत समझना है। कई समझते हैं हम चल नहीं

सकते हैं। बूढ़ा है तो उनको हाथ से पकड़ चलाओ, तो चलेंगे, नहीं तो गिर पड़ेंगे; परन्तु तकदीर में न है तो कितना भी ज़ोर देते फूल बनाने का; परन्तु बनते ही नहीं। स्वर्ग में चलने का न होगा, तो चलेंगे ही नहीं। उसको कहा जाता है काँटा। अक भी नहीं। अक फिर भी फूल होता है। यह तो काँटे हो चुभते हैं। बाप कितना समझाते हैं, कल तुम जिस शिव की पूजा करते थे वह आज तुमको पढ़ा रहे हैं। हर बात में पुरुषार्थ के लिए ही ज़ोर दिया जाता है। देखा जाता है माया अच्छे-2 फूलों को नीचे गिरा देती है। हड्डी-गुड्डी ही तोड़ देती है, जिसको फिर ट्रेटर कहा जाता। अच्छे-2 फूलों को नीचे गिरा देती है। जो एक राजधानी छोड़ दूसरे राजधानी में चला जाता है उनको ट्रेटर कहा जाता है। बाप भी कहते हैं मेरे बनकर फिर माया के बन जाते हैं तो उनको भी ट्रेटर कहा जाता है। उनकी चलन ही ऐसी हो जाती है। अभी बाप माया से छुड़ाने आये हैं। बच्चे कहते हैं माया बड़ी दुस्तर है, अपने तरफ बहुत खैंच लेती है। माया जैसी(जैसे) चकमक है। इस समय चकमक का रूप धारण करती है। कितनी खूबसूरती दुनिया में बढ़ गई है। आगे यह बायस्कोप आदि थोड़े ही थी। यह सभी 1000(100) वर्ष में निकले हैं। बाबा तो अनुभवी है ना। ऐसे नहीं कहेंगे 125 वर्ष हुआ। नहीं, ड्रामा की तो लिमिट है ना। ड्रामा को अच्छी रीत समझना चाहिए। हरेक बात एक्युरेट नुँधी हुई है। 100 वर्ष में यह जैसा बहिश्त बन गया। ऑपोज़ीशन के लिए। तो समझा जाता है अब स्वर्ग और ही जल्दी होना है। साइंस भी बहुत काम में आती है। यह तो बहुत सुख देने वाला भी है ना। वह सुख स्थायी हो जावेगा। इसके लिए पुरानी दुनिया का विनाश भी होना है। सतयुग का सुख है ही भारत के भाग्य में। वह तो आते ही बाद में हैं। जब भक्तिमार्ग शुरू होता है, जब भारतवासी गिरते हैं, तो वह नम्बरवार आते हैं। भारत गिरते-2 एकदम पट आकर पड़ती है। फिर चढ़ना है। गिरते ऐसे हैं जैसे बिल्कुल जट बन जाते। यहाँ भी चढ़ते हैं फिर गिरते हैं। कितना गिरते हैं, बात मत पूछो। कोई तो मानते ही नहीं कि शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। अच्छे-2 सर्विसएबुल, जिनकी बाप महिमा करते हैं, वह भी माया के चम्बे में आ जाते हैं। कुस्ती होती है ना। माया भी ऐसे लड़ती है। एकदम पूरा डस लेती है। आगे चल तुम बच्चों को मालूम पड़ता जावेगा। माया एकदम पूरा भुला देती है। फिर भी बाप कहते हैं एक बार ज्ञान सुना है तो स्वर्ग में ज़रूर आवेंगे। बाकी पद तो पा न सकेंगे। कल्प पहले जिसने जो पुरुषार्थ किया है वा पुरुषार्थ करते-2 गिरे हैं, ऐसे ही अब भी गिरते और चढ़ते रहते हैं। हार और जीत होती है ना। सारा मदार बच्चों का याद की यात्रा पर है। बच्चों को यह अखुट खजाना मिलता है। वह तो कितना लाखों का दिवाला मारते हैं। कोई लाखों का धनवान बनते हैं सो भी एक जन्म में। दूसरे जन्म में थोड़े ही इतना धन रहेगा। कर्मभोग है। वहाँ तो कर्मभोग की बात ही नहीं। इस समय तुम 21 जन्मों लिए कितना जमा करते हो। जो पूरा पुरुषार्थ करते हैं, पूरा स्वर्ग का वर्सा पाते हैं। यह ख्याल न करना है कि नीचे गिरेंगे भी सभी से जास्ती। नहीं, गिरते तो हैं। अभी फिर चढ़ना ही है। ऑटोमैटिकली पुरुषार्थ भी होता रहता है। देवताओं की कितनी पूजा होती है। सभी से जास्ती पूजा शिव की होती है, जिसको ही फिर ठिक्कर-भित्तर में डाल दिया है। ल॰ना॰, कृष्ण आदि को ठिक्कर-भित्तर में नहीं कहा जाता है। मनुष्यों की कितनी पत्थर बुद्धि बनी है। ऊँच ते ऊँच बाप को ठिक्कर-भित्तर में डाल दिया है। यह भी ड्रामा में ऐसा पार्ट है। बाप समझाते हैं– देखो, माया कितनी प्रबल है! मनुष्यों में कितना अज्ञान भरा हुआ है! भारत कितना फर्स्ट क्लास था! तुम समझते हो हम ऐसे बन हुए थे। अभी फिर बन रहे हैं। इन देवताओं की कितनी महिमा है; परन्तु कोई जानते ही नहीं तुम बच्चों के सिवाय। तुम ही जानते हो बेहद का बाप ज्ञान सागर हमको पढ़ा रहे हैं। कृष्ण की तो बात ही नहीं। झूठी शास्त्र आदि पढ़ते-2 कितना नीचे आ जाते हैं। माया बहुतों को संशय में डाल देती है। झूठ कपट छोड़ते ही नहीं। तब बाबा कहते हैं सच्चा-2 अपना चार्ट लिखो; परन्तु सच कोई दिखाते थोड़े ही हैं। देहअभिमान कारण सच नहीं बतलाते हैं। तो वह भी विकर्म बन जाता। सच बताना चाहिए, नहीं तो बहुत सज़ा खानी पड़ती है। गर्भजेल में भी बहुत सज़ा

मिलती है। कहते हैं– तोबा-तोबा! हम प्रतिज्ञा करते हैं, फिर ऐसा काम न करेंगे। जैसे कि(स)को मार मिलती है तो भी ऐसे माफी मांगते हैं ना। तो सज़ा मिलने पर भी ऐसे करते हैं। अभी तुम समझते हो माया का राज्य कब ... शुरू हुआ, पाप करते रहते हैं। बाप देखते हैं यह इतना मीठा, मुलायम नहीं बनते हैं। बाप कितना मुलायम, बच्चे जैसे हो चलते हैं। हाँ, अच्छा ठीक है; क्योंकि ड्रामा पर चलते रहते हैं। कहेंगे जो हुआ ड्रामा की भावी। समझाते भी हैं कि आगे ऐसा न हो। यह बापदादा दोनों इकट्ठे हैं ना। दादा की मत अपनी। ईश्वर की मत अपनी है। समझना चाहिए, यह मत कौन देते हैं। यह भी बाप तो है ना। बाप की तो माननी चाहिए। फिर भी बेहद का बाबा है। निमित्त बना हुआ है ड्रामा में, तो उनका भी मानना चाहिए ना। बाबा तो बड़ा बाबा है ना। इसलिए बाबा कहते हैं ऐसे ही समझो शिवबाबा समझाते हैं। न समझेंगे तो पद भी नहीं पावेंगे। ड्रामा के प्लैन अनुसार बाप भी है, दादा भी है। बाप की श्रीमत मिलती है। माया ऐसी है जो महावीर, पहलवान से भी कोई न कोई उल्टा काम कराती है। समझा जाता है यह बाप की मत पर नहीं है। खुद भी फ़ील करते हैं मैं अपनी आसुरी मत पर हूँ। श्रीमत देने वाला आकर उपस्थित हुआ है ना। उनकी है ईश्वरीय मत। बाप कहते हैं इनकी अगर कोई ऐसी मत मिल गई तो भी उनको मैं ठीक करने वाला बैठा हूँ। फिर भी हमने रथ लिया है ना। हमने रथ लिया है तब ही इसने गाली खाई है। नहीं तो कब गाली नहीं खाई। मेरे कारण कितनी गाली खाते हैं! तो इनकी भी सम्भाल करनी चाहिए। बाबा ने कह दिया, हर्जा नहीं है। तुमको कहाँ जाने की दरकार नहीं। कुछ भोगना भी भोगना है, यह भी आगे चल हल्के हो जावेंगे। डरने की कोई बात ही नहीं। तो बाबा ने भी कहा ठीक है कहाँ जाने की दरकार नहीं है। बरोबर बहुत फायदा है। बाप रक्षा ज़रूर करते हैं, जैसे बच्चों की रक्षा बाप करते हैं ना। जितना सच्चाई पर चलते हैं उतना रक्षा होती है। झूठे की रक्षा नहीं होती। उनकी तो फिर सज़ा कायम हो जाती है। इसलिए बाप समझाते रहते हैं माया तो एकदम नाक से पकड़कर खत्म कर देती है। बच्चे खुद फ़ील करते हैं। माया खा लेती है, फिर पढ़ाई छोड़ देते। बाप कहते हैं पढ़ाई ज़रूर पढ़ो। अच्छा, कहाँ ब्राह्मणी का दोष है तो सैलवेशन दी जाती है डायरैक्ट मुरली की। कोई–कोई थर्ड ग्रेड ब्राह्मणियाँ होती हैं, बहुत तंग करती हैं। इसमें जैसा जो करेगा सो भविष्य में वैसा पावेंगे; क्योंकि अभी दुनिया बदलती है। माया ऐसी थप्पड़ मारती है जो वह खुशी नहीं रहने देती। फिर चिल्लाते हैं बाबा पता नहीं क्या होता है। युद्ध के मैदान में बहुत खबरदारी रहती है कि कहाँ माया थप्पड़ न मारे। फिर भी जास्ती ताकत वाला होता है तो दूसरों को गिरा देते हैं। अगर दोनों एक/दो से तंग होते हैं तो फिर स्टॉप कर देते हैं। समझते हैं अभी थक गए हैं। फिर दूसरे दिन पर रख देते हैं। माया की लड़ाई तो अन्त तक चलती रहती है। नीचे-ऊपर होते रहते हैं। अच्छे-2 महारथी सच नहीं बताते हैं। इज़्ज़त का बहुत डर है। पता नहीं बाबा क्या कहेंगे। जब तक सच बताया न है तब तक आगे चल न सके। अन्दर वह खटकता रहता है। फिर वृद्धि हो जाती है। अच्छे-2 महारथी बहुत हैं जो आपे ही सच कभी नहीं बतावेंगे। कहाँ दो है तो समझते हैं, यह को(जो) सुनावेंगे तो हम भी सुना दें। माया बड़ी दुस्तर है। समझा जाता है इनके तकदीर में इतना ऊँच पद न है, जो सर्जन से छिपाते हैं। छिपाने से बीमारी छूटेंगे थोड़े ही। जितना छिपावेंगे उतना गिरते ही रहेंगे। भूत तो सभी में हैं ना। जक तक कर्मातीत अवस्था न बनी है तब तक क्रिमिनल आई छोड़ती ही नहीं है। सबसे बड़ा दुश्मन है काम। कई गिर पड़ते हैं। बाबा तो बार-2 समझाते हैं शिवबाबा को भाकी पहनना कोई मासी का घर नहीं। फिर और कोई को भाकी पहन नहीं सकते; परन्तु खुद भी समझते हैं हम तो भाकी पहनते रहते हैं। ऐसे भी बहुत हैं। कई तो ऐसे पक्के हैं जो कब किसकी याद भी नहीं आवेगी। पतिव्रता स्त्री होती है ना। उनकी कुबुद्धि नहीं होती है। अच्छा, मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

शिवबाबा याद है?